ये अव्यक्त इशारे

स्वयं और सर्व के प्रति मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

14-10-2025

मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देख कर स्वतः ही आकर्षित होंगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज सेवा होती रहेगी। अगर वाणी के लिए समय नहीं है तो वृत्ति से, मन्सा सेवा से परिवर्तन करने का समय तो है ना। अब सेवा के सिवाए समय गंवाना नहीं है। निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो। यदि मन्सा-सेवा करना नहीं आता तो अपने सम्पर्क से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो।

Experiment on yourself and others with your mind with the powers of yoga.

Service with your mind is unlimited service. To the extent that people see you as a sample of serving with your mind and with words, they will accordingly be attracted. Simply have this determination and service will easily continue to take place. If you do not have time to serve with words, then you at least have time to bring about transformation by serving with your attitude and your mind. You must now not waste time in anything, but just do service. Be a constant yogi and a constant server. If you do not know how to serve with your mind, you can serve with your connection your behaviour